



प्रेस विज्ञप्ति

**आईआईटी भुवनेश्वर ने 17वीं परियोजना मूल्यांकन और निगरानी समिति  
(पीएएमसी) जल विज्ञान और क्रायोस्फीयर बैठक की मेजबानी की**

**भुवनेश्वर, 4 अक्टूबर 2024:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर 17वीं परियोजना मूल्यांकन और निगरानी समिति (पीएएमसी) जल विज्ञान और क्रायोस्फीयर बैठक की मेजबानी कर रहा है। बैठक का आयोजन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। भारत और आईआईटी भुवनेश्वर में 3 से 5 अक्टूबर 2024 तक आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्देश्य जल विज्ञान और क्रायोस्फीयर के क्षेत्र में विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा की जा रही परियोजनाओं का आकलन करना है। आईआईटी भुवनेश्वर पहली बार MoES PAMC बैठक की मेजबानी कर रहा है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) की सदस्य सचिव डॉ. अपर्णा शुक्ला ने उद्घाटन सत्र के दौरान स्वागत भाषण दिया और बैठक के संक्षिप्त विवरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए मंत्रालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख किया। 17वीं पीएएमसी में, नई परियोजनाएं 'हिमालय के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में जोखिम न्यूनीकरण' शीर्षक के तहत प्रस्तुत की जाती हैं। अनुसंधान प्रस्तावों को तीन प्रमुख विषयों के तहत आमंत्रित किया गया था, अर्थात् ग्लेशियर खतरों का मानचित्रण और निगरानी, जोखिम और जोखिम मूल्यांकन के लिए खतरों की मॉडलिंग और जोखिम न्यूनीकरण रणनीतियों के विकास द्वारा अनुकूलन। इन विषयों के तहत, 4 हिमालयी राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों तक सीमित अध्ययन के लिए प्रस्ताव आमंत्रित किए गए थे," डॉ. शुक्ला ने बताया।

इस अवसर पर बोलते हुए, आईआईएससी बेंगलोर के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक और पीएएमसी के अध्यक्ष प्रो. ए. वी. कुलकर्णी इन क्षेत्रों से जुड़ी भेद्यता और जोखिमों को ध्यान में रखते हुए, पीएएमसी ने इस क्षेत्र में अनुसंधान करने का अवसर पैदा करने का मुद्दा उठाया है, जिसे राज्य सरकारों द्वारा कार्यान्वित किया जा सकता है, और बदले में ऊंचे पहाड़ों में जोखिम को कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस बैठक का उद्देश्य क्रायोस्फीयर और जल विज्ञान अनुसंधान को बढ़ाने पर विचार-मंथन करना था, ताकि नीति निर्माता समाज के व्यापक हित के लिए अध्ययन के परिणामों का उपयोग कर सकें।

अपने संबोधन में, आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रोफेसर श्रीपाद कर्मलकर ने संस्थान और पृथ्वी और जलवायु विज्ञान के प्रति इसकी प्रतिबद्धता का एक संक्षिप्त अवलोकन साझा किया। उन्होंने कहा कि आईआईटी भुवनेश्वर 5 स्तंभों पर काम कर रहा है: 'ज्ञान प्रसार (शिक्षण), ज्ञान सृजन (अनुसंधान), ज्ञान अनुप्रयोग (परामर्श), धन सृजन (नवाचार और उद्यमिता) और एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम

के माध्यम से शिक्षक शिक्षा'। उन्होंने छात्रों के लिए संस्थान द्वारा शुरू किए गए नए पाठ्यक्रम 'अनुसंधान और उद्यमिता का परिचय' पर भी प्रकाश डाला।

इस अवसर पर बोलते हुए, प्रो. दिनाकर पासला, डीन-प्रायोजित अनुसंधान और औद्योगिक परामर्श ने इस बात पर प्रकाश डाला कि जलवायु निगरानी और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में अत्याधुनिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए आईआईटी भुवनेश्वर में पृथ्वी, महासागर और जलवायु विज्ञान स्कूल है। उन्होंने कहा, "स्कूल हर गुजरते साल के साथ आगे बढ़ रहा है और नए मानक स्थापित कर रहा है।"

डॉ. सैयद हिलाल फारूक (स्कूल के प्रमुख, स्कूल ऑफ अर्थ ओशियन एंड क्लाइमेट साइंसेज) ने भी इस अवसर पर बात की और स्कूल ऑफ अर्थ, ओशन एंड क्लाइमेट साइंसेज का एक संक्षिप्त अवलोकन साझा किया, जो इससे संबंधित मुद्दों और चिंताओं के प्रति समग्र दृष्टिकोण रखता है। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय खतरे।

डॉ. देबमिता बंद्योपाध्याय, परियोजना वैज्ञानिक, MoES ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

स्कूल ऑफ अर्थ ओशन एंड क्लाइमेट साइंसेज के सहायक प्रोफेसर डॉ. आशिम सत्तार ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

-----